ध्यान सूली है

लेकिन सूली के बिना सिंहासन नहीं

ध्यान में मृत्यु घटती है। ध्यान सूली है, लेकिन सूली के बिना सिंहासन नहीं। ध्यान में जो मरता है, वही परमात्मा में जगता है। संसार से तो तुम मृतवत हो जाते हो और परमात्मा तुम में जीवंत हो जाता हो। मरने की तैयारी रखना, क्योंकि वही साधना है

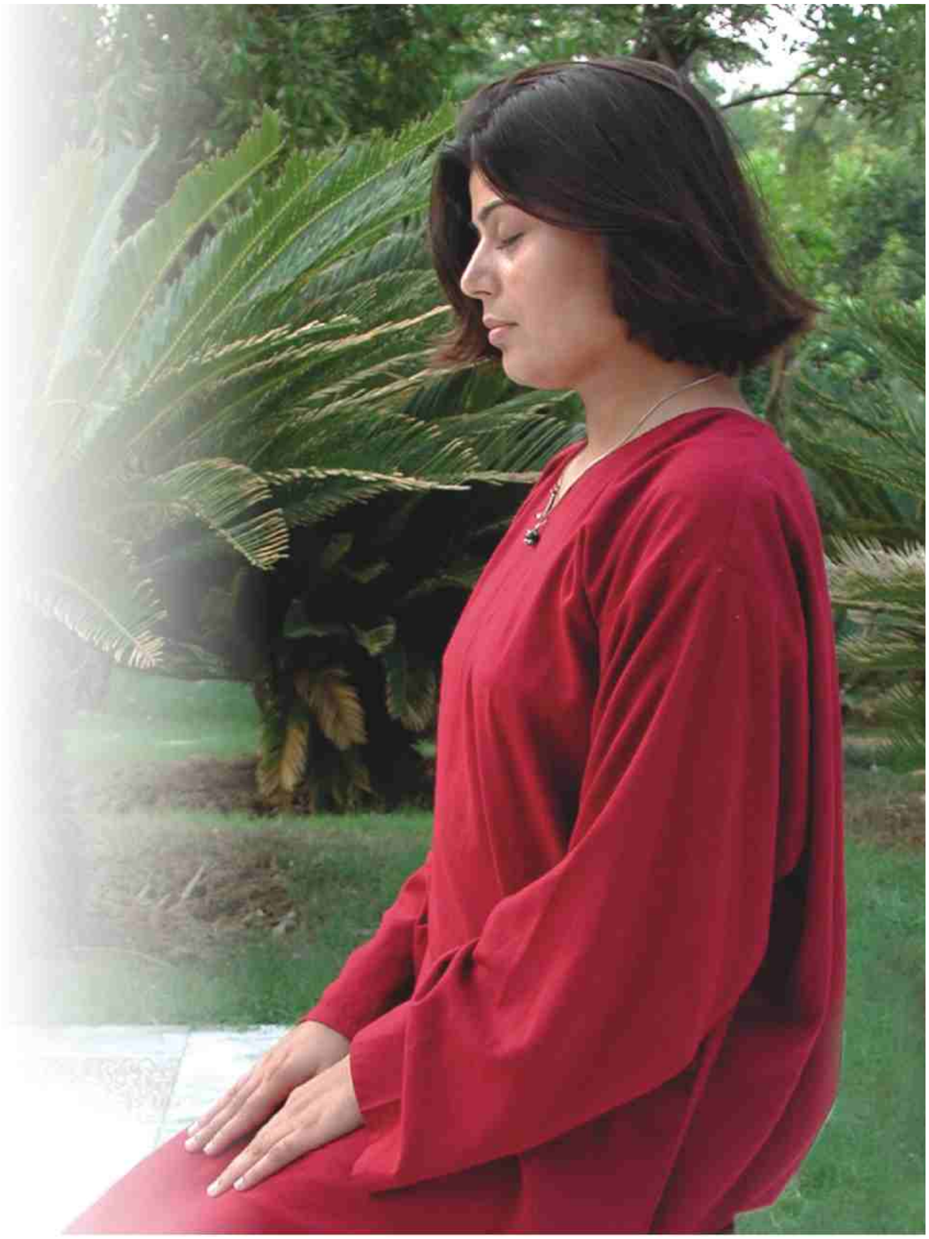

इब्तिदा से आज तक नातिक की है ये सरगुजश्त
पहले चुप था, फिर हुआ दीवाना, अब बेहोश है
ये तीन घड़ियां आती हैं पहले चुप था, फिर हुआ दीवाना...

क्योंकि जैसे ही तुम चुप हुए, दुनिया तुम्हें दीवाना कहेगी। इधर तुम चुप हुए कि उधर खबर फैलनी शुरू हुई कि तुम दीवाने हुए, कि तुम पागल हुए। ऐसे दुनिया अपनी रक्षा करती है। ऐसे दुनिया तुम्हें पागल न कहे तो फिर और लोग भी इसी रास्ते पर जाने को आतुर हो जाएं। असल में दुनिया अपनी रक्षा करती है, क्योंकि तुम्हें देखकर औरों के मन में भी उठती है आवाज। लेकिन तब बड़ा हेर-फेर करना पड़ेगा। जिंदगी का ढांचा बदलना पड़ेगा। वह जरा ज्यादा मुश्किल है। तुम पागल हो—ऐसा तुम्हें पागल कहकर आदमी निश्चिंत हो जाते हैं कि पागल है, छोड़ो भी उसकी बात। मेरे संन्यासियों को लोग पागल ही समझते हैं। पागल हैं, उनकी बात ही मत सुनो—ऐसे वे तुम्हें पागल कह रहे हैं, यह नहीं है। ऐसे वे इतना ही कह रहे हैं कि आकर्षित

तो वे भी हो रहे हैं, लेकिन भयभीत हैं, कमजोर हैं, कायर हैं। तुम्हें पागल कहकर वे अपने को बचाने की कोशिश कर रहे हैं। तुम अगर पागल सिद्ध हो जाओ तो यह झंझट मिटे, अन्यथा तुम उन्हें भी बुलाए ले रहे हो! उन्हें भी तुम आकर्षित किए ले रहे हो! उन्हें भी तुम खींचे ले रहे हो! उस खिंचाव को झुठलाने के लिए, उस आकर्षण से बच जाने के लिए वे तुम्हें पागल घोषित कर रहे हैं।

जैसे ही तुम चुप होते हो, तुम इतने बलशाली होने लगते हो कि समाज की निर्भरता तुम छोड़ने लगते हो। और तुम्हारे जीवन में एक मस्ती आती है जो केवल दीवानों के जीवन में होती है; तुम्हारे चेहरे पर एक नई रौनक आ जाती है; तुम्हारी आंखें किसी और ही ओज से भर जाती हैं;

पहले चुप था, फिर हुआ दीवाना...

लेकिन यह 'दीवाना' दोहरा अर्थ रखता है। लोग पागल कहें या न कहें, जो चुप होता है वह एक अर्थ में दीवाना हो ही जाता है। किस अर्थ में दीवाना हो जाता है? इस अर्थ में दीवाना हो जाता है कि चुप होने के साथ ही साथ वह समाज के घेरे के बाहर पड़ने लगता है, मुक्त होने लगता है।

जैसे ही तुम चुप होते हो, तुम इतने बलशाली होने लगते हो कि समाज की निर्भरता तुम छोड़ने लगते हो। और तुम्हारे जीवन में एक मस्ती आती है जो केवल दीवानों के जीवन में होती है; तुम्हारे चेहरे पर एक नई रौनक आ जाती है; तुम्हारी आंखें किसी और ही ओज से भर जाती हैं; तुम्हारे पैर चलते हैं, जमीन पर पड़ते नहीं; जैसे तुम हमेशा किसी नशे से भरे हो!

आज की सुबह मेरे कैफ का अंदाज न पूछ
दिले-वीरां में अजब अंजुमन आराई है

मत पूछ मेरी मस्ती का हिसाब! उजड़े हुए हृदय में कोई अजीब महोत्सव हुआ है, कोई नई धुन बजी है! दीवाने तो तुम हो ही जाओगे। पागल तो तुम मालूम होने ही लगोगे। पर यह पागलपन चुनने जैसा है। यह पागलपन करने जैसा है। तुम्हारी सारी होशियारियां भी इकट्ठी होकर इस पागलपन के एक कतरे का भी मुकाबला नहीं कर सकतीं। तुम्हारी बुद्धिमत्ता दो कौड़ी की है। क्योंकि जिसने पागल होना जाना, उसने ही परमात्मा का होना भी जाना।

फिर हुआ दीवाना, अब बेहोश है

और फिर तीसरी घड़ी भी आती है। जब तुम नहीं रहते, तुम बचते ही नहीं। उसी घड़ी को 'बेहोश' कहते हैं। बेहोशी का मतलब यह नहीं है कि तुम्हारा होश खो जाता है। बेहोशी का मतलब है कि तुम खो जाते हो, होश तो पूरा हो जाता है। यह ऐसी बेहोशी है कि इसमें होश खोता नहीं, बढ़ जाता है, लेकिन तुम मिट जाते हो। यही सांसारिक शराब और परमात्मा की शराब का भेद है। जब तुम शराब पीते हो, तुम तो रहते हो, होश खो जाता है। जब तुम परमात्मा को पीते हो, तुम तो मिट जाते हो, होश रह जाता है।

इब्तिदा से आज तक नातिक की है ये सरगुजश्त
पहले चुप था, फिर हुआ दीवाना, अब बेहोश है

घबड़ाना मत। यहीं तो सदगुरु की जरूरत हो जाती है। तुम्हारा डर स्वाभाविक है। अब तक जिस ढंग से तुम जीए, वह सब लड़खड़ा जाएगा। अब तक जिसको तुमने जिंदगी समझी थी, अब जिंदगी मालूम न होगी। अब कहीं दूर ने तुम्हें पुकारा। अब तुम चल पड़े किसी ऐसी खोज में, जहां आदमी को अकेला ही जाना पड़ता है, जहां राजपथ नहीं है, जहां बस पगडंडियां हैं। पगडंडियां भी पहले से तैयार नहीं; चलते हो, बस उतनी ही तैयार होती है। दुनिया तो यही समझेगी कि तुम गए! दुनिया तो यही समझेगी कि तुम मुर्दा हुए।

मुहब्बत ने उम्रे-अबद हमको बख्शी
मगर सब यह समझे फना हो गए हम

लोग यही समझे कि मर गया यह आदमी। पहले समझेंगे पागल, फिर समझेंगे मृत। लोग भूल ही जाएंगे तुम्हें कि तुम हो भी। ऐसा किनारा काटकर निकल जाएंगे। दुनिया यही समझेगी, यह आदमी समाप्त हुआ। लेकिन तुम्हारे भीतर जो घटा है, वह तुम्हीं जानते हो। तुम्हारे भीतर जो मेघ-मल्हार जगी है, वह तुम्हीं जानते हो। तुम्हारे भीतर आषाढ़ के मेघों को देखकर जो मोर नाचने लगे हैं, वह तुम्हीं जानते हो। तुम्हारे भीतर जो अमृत बरसा है, मृत्यु समाप्त हुई है, लेकिन लोगों के लिए तुम लगोगे कि मृतक हो गए।

मौन से शुरूआत होती है। उस शुरूआत में डर लगेगा, भय लगेगा, भाग जाने का मन होगा, लौट-लौटकर लोगों से बात करने का मन होगा, किसी तरह अपने को उलझा लेने का मन होगा। क्योंकि जो तुम्हारी गहराई है भीतर, वह तुमसे भी गहरी है, वह तुमसे पार है। उस गहराई में उतरते वक्त मौत रास्ते में पड़ेगी; ऐसा लगेगा कि मरे, गए!

ध्यान में मृत्यु घटती है। ध्यान सूली है, लेकिन सूली के बिना सिंहासन नहीं। ध्यान में जो मरता है, वही परमात्मा में जगता है। संसार से तो तुम मृतवत हो जाते हो और परमात्मा तुम में जीवंत हो जाता हो। मरने की तैयारी रखना, क्योंकि वही साधना है। और मरकर ही मिलता है महाजीवन।

शुभ है घड़ी, घबड़ाना मत। सम्हालना इस घड़ी को टूट न जाए, फूट न जाए, बिखर न जाए। बड़े सौभाग्य से आती है, बड़ी मुश्किल से आती है। सैकड़ों कोशिश करते हैं, किसी एकाध को आती है। धन्यभागी मानना अपने को और परमात्मा के प्रति अनुग्रह का भाव रखना कि इतनी समझ दी है, तो द्वार खुलने लगा। बहुत कुछ और होगा।

पहले चुप था, फिर हुआ दीवाना, अब बेहोश है।

—ओशो

एस धम्मो सनंतनो

प्रवचन नं. 26 से संकलित

(पूरा प्रवचन टेप पर भी उपलब्ध है)